NAME :- PALAK

COURSE :- B.A. (SANSKRIT HONS.)

ROLLNO :- SKT/19/29

SUBJECT :- SANSKRIT METER AND MUSIC

TOPIC :- छन्द शास्त्र पर विस्तार से निबंध।

DATE :- 16-April-2021.

TEACHER INCHARGE :- DR. KALPANA SHARMA MAM.

Teacher's Signature :

Q.1.> छन्द शास्त्र पर विस्तार से निबंध लिखिए?

∴ भारतीय छन्दशास्त्र :-

छन्द शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। "छन्दस्" वेद का पर्यायवाची नाम है। सामान्यतः वर्णों और मात्राओं की गेय-व्यवस्था को छन्द कहा जाता है। इसी अर्थ में पद्य शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पद्य अधिक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। भाषा में शब्द और शब्दों में वर्ण तथा स्वर रहते हैं। इन्हीं को एक निश्चित विधान से सुव्यवस्थित करने पर 'छन्द' का नाम दिया जाता है।

छन्द शास्त्र इसलिये अत्यन्त पुष्ट शास्त्र माना जाता है क्योंकि वह गणित पर आधारित है। वस्तुतः देखने पर ऐसा प्रतीत होता है। कि छन्दशास्त्र की रचना इसलिए की गई जिससे अग्रिम सन्तति इसके नियमों के आधार पर छन्द रचना कर सके। छन्दशास्त्र के ग्रन्थों को देखने से यह भी ज्ञात होता है। कि जहाँ एक ओर प्रस्तार आदि के द्वारा आचार्य छन्दों में किंचित् परिर्वन करते हुए नवीन छन्दों की सृष्टि करते रहे जिनका छन्दशास्त्र के ग्रन्थों में कालान्तर में समावेश हो गया।

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में छन्दःशास्त्र के लिए अनेक नामों का व्यवहार उपलब्ध होता है:

(१) छन्दोविचिति ,। (२) छन्दोमान ,। (३) छन्दोभाषा।, (४) छन्दोविजिनी।

(५) छन्दोविजिति ,।(छन्दोविजित), (६) छन्दोनामा ,।(७) छन्दोव्याख्यान, ।

(८) छन्दसांविच्य।, (९) छन्दसांलक्षण ,।(१०) छन्दःशास्त्र ,।(११) छन्दोऽनुशासन ,।

(१२) छन्दोविवृति ,।(१३) वृत्त ,। (१४) पिङ्गल ।

★ छन्दशास्त्र का विवेच्य विषय

छन्दशास्त्र में मुख्य विवेच्य विषय दो हैं :-

- छंदों की रचनाविधि, तथा
- छन्द सम्बन्धी गणना जिसमें प्रस्तार, पताका, उद्दिष्ट, नष्ट आदि का वर्णन किया गया है। इनकी सहायता से किसी निश्चित संख्यातक वर्णों और मात्राओं के छन्दों की पूर्ण संख्यादि का बोध सरलता से हो जाता है।

छन्द मुख्यतः दो प्रकार के हैं :

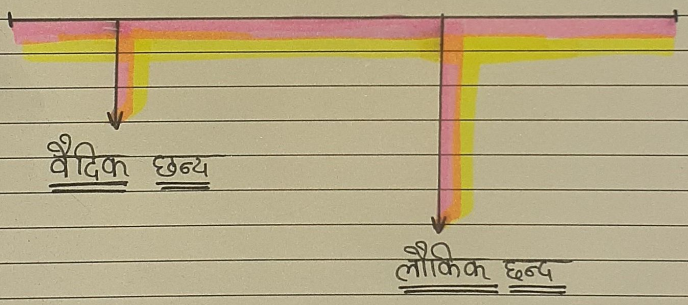

★ **वैदिक छन्द :-** जिनका प्रयोग वेदों में प्राप्त होता है। इनमें ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और स्वरित, इन चार प्रकार के स्वरों का विचार किया जाता है, यथा "अनुष्टुप" इत्यादि। वैदिक छंद अपौरुषेय माने जाते हैं।

★ **लौकिक छन्द** :- इनका प्रयोग साहत्यांतर्गत किया जाता है, किंतु वस्तुतः लौकिक छंद वे छंद हैं। जिनका प्रचार सामान्य लोक अथवा जनसमुदाय में रहता है। ये छंद किसी निश्चित नियम पर आधारित रहते हैं।, इसलिए इनकी रचना सामान्य अपठित जन भी कर लेते हैं। लौकिक छन्दों से तात्पर्य होता है। उन छन्दों से जिनकी रचना निश्चित नियमों के आधार पर होती है। और जिनका प्रयोग सुपठित कवि काव्यादि रचना में करते हैं। इन लौकिक छन्दो के रचना-विधि-संबंधी नियम सुव्यवस्थित रूप से जिस शास्त्र में रखे गए है उसे छंदशास्त्र कहते हैं।

∴ **वर्णिक छन्द**

इनमें वृतों की संख्या निश्चित रहती है। इसके भी दो प्रकार हैं-

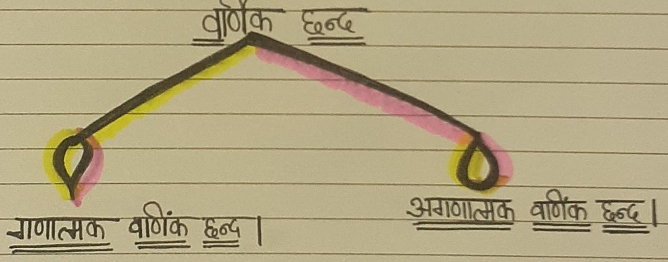

★ **गणात्मक वर्णिक छन्द** :- को वृत्त भी कहते हैं। इनकी रचना तीन लघु और दीर्घ गणों से बने हुए गुणों के आधार पर होती है। लघु तथा दीर्घ के विचार से यदि वर्णों के प्रस्तारव्यवस्था की जाए आठ रूप बनते हैं।

इन्हीं को "आठ गण" कहते हैं इनमें भ, न, स, य शुभ गुण माने गए हैं।

गए हैं। और ज, र, स, त अशुभ माने गए हैं। इनमें भ, म, य शुभ गुण माने गए हैं। और ज, र, स, त अशुभ माने गए हैं। वाक्य के आदि में प्रथम चार गणों का प्रयोग उचित है, अंतिम चार का प्रयोग प्रथम निषिद्ध है। यदि अशुभ गणों से प्रारंभ होनेवाले छंद का ही प्रयोग करना है, देवतावाची या मंगलवाची वर्ण अथवा शब्द का प्रयोग प्रथम करना चाहिए इससे गणदोष दूर हो जाता है। इन गणों में परस्पर मित्र, शत्रु और उदासीन भाव माना गया है। छंद के आदि में दो गणों का मेल माना गया है। वर्णों के लघु एवं दीर्घ मानने का भी नियम है। लघु स्वर अथवा एक मात्रावाले वर्ण लघु अथवा ह्रस्व माने गए और इसमें एक मात्रा मानी गई है। दीर्घ स्वरों से युक्त संयुक्त वर्णों से पूर्व का लघु वर्ण भी विसर्ग युक्त और अनुस्वार वर्ण तथा छंद का वर्ण दीर्घ माना जाता है।

* **अगणात्मक वर्णिक वृत्त :-** वे हैं। जिनमें गणों का विचार नहीं रखा जाता, केवल वर्णों की निश्चित संख्या का विचार रहता है। विशेष मात्रिक छंदों में केवल मात्राओं का ही निश्चित विचार रहता है। और यह एक विशेष लय अथवा गति (पाठप्रवाह अथवा पाठपद्धति) पर आधारित रहते हैं। इसलिए ये छंद लयप्रधान होते हैं।

- **यमाताराजभानसलगा:** (या, यमाताराजभानसलगं)

जिस गण को जानना हो उसका वर्ण इस में देखकर अगले दो वर्ण और साथ जोड़ लेते हैं। और उसी क्रम से गण की मात्राएँ लगा लेते हैं, जैसे:

यगण - यमाता = ISS आदि लघु।
मगण - मातारा = SSS सर्वगुरु।
तगण - ताराज = SSI अन्तलघु।
रगण - राजभा = SIS मध्यलघु।

जगण - जभान = ।ऽ। मध्यगुरु ।
भगण - भानस = ऽ।। आदिगुरु ।
नगण - नसल = ।।। सर्वलघु ।
सगण - सलगाः = ।।ऽ अन्तगुरु ।

मात्राओं में जो अकेली मात्रा है, उस के आधार पर इन्हें आदिलघु या आदिगुरु कहा गया है। जिसमें सब गुरु है, वह "मगण" सर्वगुरु कहलाया और सभी लघु होने से 'नगण' सर्वलघु कहलाया ।

∴ मात्रिक छन्द

संस्कृत में अधिकतर वार्णिक छन्दो का ही ज्ञान कराया जाता है; मात्रिक छन्दों का काम ।

∴ दोहा

संस्कृत में इस का नाम 'दोहडिका' छन्द है। इसके विषम चरणों में तेरह-तेरह और सम चरणों में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों के आदि में ।ऽ। (जगण) इस प्रकार का मात्रा-क्रम नहीं होना चाहिए और अंत में गुरु और लघु (ऽ।) वर्ण होने चाहिए । सम चरणों की तुक आपस में मिलनी चाहिए जैसे :-

।ऽ।ऽ।। ऽ। ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ।
महद्धनं यदि ते भवेत, दीनेभ्यस्तद्देहि ।
विधेहि कर्म सदा शुभं, शुभं फलं त्वं प्रेहि ॥

इस दोहे की पहली पंक्ति में विषम और सम दोनों चरणों पर मात्राचिह्न लगा दिए हैं। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति में भी आप दोनों चरणों पर ये चिह्न लगा सकते हैं। अतः दोहा एक अर्धसम मात्रिक छन्द है।

∴ हरिगीतिका

हरिगीतिका छन्द में प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। और अन्त में लघु और फिर गुरु वर्ण अवश्य होना चाहिए। इसमें यति 16 तथा 12 मात्राओं के बाद होती हैं, जैसे

IISI S S SISIISI S S S I S
मम मातृभूमिः भारतं धनधान्यपूर्णं स्यात् सदा।
नग्नो न क्षुधितो कोऽपि स्यादिह वर्धतां सुख-सन्ततिः।
स्युर्ज्ञानिनो गुणशालिनो ह्युपकार - निरता मानवः,
अपकारकर्ता कोऽपि न स्याद् दुष्टवृत्तिर्दानवः॥

∴ गीतिका

इस छन्द में प्रत्येक चरण में छब्बीस मात्राएँ होती हैं। और 14 तथा 12 मात्राओं के बाद यति होती है। जैसे:

SIS II SI SSSISSSIS
हे दयामय दीनबन्धो, प्रार्थना मे श्रूयतां
यच्च दुरितं दीनबन्धो, पूर्णतो व्यपनीयताम्।
चंचलानि मम चेन्द्रियाणि, मानसं मे पूयतां
शरणं याचेऽहं सदा हि, सेवकोऽस्म्यनुगृह्यताम्॥

∴ सम, विषम, अर्धसम छन्द

छंदो का विभाजन मात्राओं और वर्णों की चरण-भेद-संबंधी विभिन्न संख्याओं पर आधारित है। इस प्रकार छंद सम, विषम, अर्धसम होते हैं। सम छंदो में छंद के चारों चरणों में वर्णस्वरसंख्या समान रहती है। अर्धसम में प्रथम, तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ में वर्णस्वर संख्या समान रहती है। विषम छंद के चारों चरणों में वर्णों एवं स्वरों की संख्या असमान रहती है।

ये वर्ण परस्पर पृथक होते हैं। वर्णों और मात्राओं की कुछ निश्चित संख्या के पश्चात बहुसंख्यक वर्णों और स्वरों से युक्त छंद दंडक कहे जाते हैं। इनकी संख्या बहुत अधिक है।

∴ स्वतंत्र छन्द और मिश्रित छन्द

छंदो का विभाजन फिर अन्य प्रकार से भी किया जा सकता है। स्वतंत्र छंद और मिश्रित छंद। स्वतंत्र छंद एक ही छंद विशेष नियम से रचा हुआ रहता है।

मिश्रित छंद दो प्रकार के है :-

- जिनमें दो छंदों के चरण एक दूसरे से मिला दिए जाते हैं। प्रायः ये अलग अलग जान पड़ते हैं। किंतु कभी-कभी नहीं भी जाना पड़ते।
- जिनमें दो स्वतंत्र छंद स्थान-स्थान पर रखे जाते है और कभी उनके मिलाने का प्रयत्न किया जाता है, जैसे कुंडलिया छंद एक दोहा और चार पद रोला के मिलाने से बनता है।

दोहा और रोला के मिलाने से दोहे के चतुर्थ चरण की आवृत्ति उसके प्रथम चरण के आदि में की जाति है। और दोहे के प्रारंभिक कुछ शब्द रोले के अंत में रखे जाते हैं। दूसरे प्रकार का मिश्रित छंद है। "छप्पय" जिसमें चार चरण रोला के देकर दो उल्लाला के दिए जाते हैं। इसलिए इसे षट्पदी अथवा छप्पय (छप्पद) कहा जाता है।

∴ यति के विचार से छन्द

TOPIC

Date : 8.
Page No. :

लघु छंदो को छोड़कर बड़े छंदो का एक चरण जब एक बार में पूरा नहीं पढ़ा जा सकता, उसमें रचना के रुकने का स्थान निर्धारित किया जाता है। इस विरामस्थल को यति कहते हैं। यति के विचार से छंद फिर दो प्रकार के हो जाते हैं।

- यत्यात्मक :
- अयत्यात्मक :

- **यत्यात्मक** :- जिनमें कुछ निश्चित वर्णों या मात्राओं पर यति रखी जाती है। यह छंद प्रायः दीर्घकारी होते हैं। जैसे दोहा, कवित्त आदि।

- **अयत्यात्मक** :- जिन छंदों में चौपाई, द्रुत, विलंबित जैसे छंद आते हैं। यति का विचार करते हुए गणात्मक वृत्तों में गणों के बीच में भी यति रखी गई है। जैसे मालिनि। इससे स्पष्ट है। कि यति का उद्देश्य केवल रचना को कुछ विश्राम देना ही है।

छंद में संगीत तत्व द्वारा लालित्य का पूरा विचार रखा गया है। प्रायः सभी छंद किसी न किसी रूप में गेय हो जाते हैं। राग और रागिनी वाले सभी पद छंदों में नहीं कहे जा सकते। इसी लिए "गीति" नाम से कतिपय पद रचे जाते हैं। प्रायः संगीतात्मक पदों में स्वर के आरोह तथा अवरोह में बहुधा लघु वर्ण को दीर्घ, दीर्घ को लघु और अल्प लघु भी कर लिया जाता है। कभी-कभी हिंदी के छंदों में दीर्घ ए और ओ जैसे स्वरों के लघु रूपों का प्रयोग किया जाता है।

Teacher's Signature :

TOPIC

Date : 10
Page No. :

∴ पुष्पिताग्रा छन्द

उदा.

"इति मतिरूपकल्पिता वितृष्णा, भगवति सात्वतपुंगवे विभुम्नि।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं, प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः॥

∴ छन्दशास्त्र का प्रभाव

★ भारत में

हिन्दू परम्परा में साहित्यिक ज्ञान के पाँच अंगों में छन्द भी एक है। अन्य चार हैं। - गुण, रीति या मार्ग, अलङ्कार, तथा रस। हिन्दू ग्रन्थों में छन्दों को पवित्र माना जाता है। इनमें भी गायत्री छन्द को सर्वाधिक परिशुद्ध एवं पवित्र माना जाता है।

★ अन्य देशों में

भारतीय छन्दशास्त्र का दक्षिणपूर्वी एशिया के छन्दों एवं काव्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए, थाई चान (थाई: [illegible]) ऐसा माना जाता है। कि यह प्रभाव या तो कम्बोडिया से होकर आया है। या सिंहल से संस्कृत छन्दों का छठी शताब्दी के चीनी साहित्य पर भी प्रभाव देखा गया है। शायद यह प्रभाव उन बौद्ध भिक्षुओं के साथ गया जो भारत से चीन गए।

∴ छन्दशास्त्र से सम्बन्धित संस्कृत ग्रन्थ

संस्कृत छन्दशास्त्र से सम्बन्धित लगभग ३५० ग्रन्थों ज्ञात हैं जिनमें कोई ८५० छन्दों की परिभाषा और वर्णन है।

Teacher's Signature :

TOPIC

Date : 11.

Page No. :

- पिंगल - छन्दः सूत्रम्
  इसकी टीकाएं -
  - जयदेवकृत - जयदेवछन्द । (छठी शताब्दी)
  - गणस्वामी - जानाश्रयी छन्दोविचितिः (छठी शताब्दी)
  - अज्ञात - छन्दोरत्नमञ्जूषा । (छठी शताब्दी)

- भट्ट हलायुध - छन्दशास्त्र का भाष्य (३० वीं शताब्दी)

- चित्रसेन - पिङ्गलटीका ।
- रविकार - पिङ्गलसारविकासिनी ।
- राजेन्द्र दशावधान - पिङ्गलतत्वप्रकाशिका ।
- लक्ष्मीनाथ - पिङ्गलप्रदीप ।
- वंशीधर - पिङ्गलप्रकाश ।
- वामनाचार्य - पिङ्गलप्रकाश ।

- जयकीर्ति - छन्दोनुशासन ।
- क्षेमेन्द्र - सुवृत्त तिलक ।
- केदार भट्ट - वृत्तरत्नाकर ।
- विरहांक - वृत्तजात समुच्चय ।

∴ अन्य ग्रन्थों में छन्दशास्त्र का वर्णन

- आचार्य भरत - नाट्यशास्त्र (अध्याय ३४, ३५)
- अग्निपुराण (अध्याय ३)
- वाराहमिहिरकृत - बृहत्संहिता
- कालिदास (दन्तकथा के आधार पर) - श्रुतिबोध

Teacher's Signature :